अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है:—

इस मत के मानने वाले यह विचार व्यक्त करते हैं कि इसमें तथ्यों का यथास्थिति वर्णन तथा व्याख्या होती है। इसका संबंध 'क्या है' से होता है, अर्थात यह तथ्यों का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत करता है। तथ्यों के बीच के कार्य-कारण संबंध की व्याख्या प्रस्तुत करता है, अतः अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है।

इस विचारधारा के समर्थकों में क्लासिकल अर्थशास्त्रियों में जे० बी० से तथा सीनियर के साथ-साथ आधुनिक अर्थशास्त्री रॉबिन्स का नाम जुड़ा

Ajanta PRODUCTS Oxford

Scanned with CamScanner

जुड़ा हुआ है। जे० बी० से का कहना है, "जनता के प्रति हमारा कर्तव्य उसे केवल यह बता देना है कि अमुक घटना किस प्रकार से अमुक घटना का परिणाम है। चाहे यह निष्कर्ष स्वीकृत हो या अस्वीकृत। इतना ही यथेष्ट है कि अर्थशास्त्री द्वारा उसके कारणों को प्रदर्शित एवं व्यक्त कर दिया जाए, परंतु उसे इस संबंध में परामर्श के रूप में एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए।" आधुनिक अर्थशास्त्री प्रो० रॉबिन्स भी इसी तरह का विचार व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार अर्थशास्त्र का संबंध केवल साध्यों से है, लक्ष्यों से नहीं। अर्थशास्त्र लक्ष्यों के बीच तारतम्य होता है या क्या अच्छा है या क्या बुरा इससे अर्थशास्त्र का कोई संबंध नहीं है। अर्थशास्त्री का कार्य अनुसंधान एवं व्याख्या करना है, न कि समर्थन एवं निन्दा करना। - दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र का कार्य उचित - अनुचित को देखना नहीं है। यह नीतिशास्त्र से संबंध नहीं है। रॉबिन्स के अनुसार - "अर्थशास्त्र, जाँचने-योग्य तथ्यों का अध्ययन करता है, जबकि नीतिशास्त्र का संबंध मूल्यांकन एवं दायित्वों से है। अन्वेषण के ये दोनों क्षेत्र एक समतल पर नहीं हैं।"

अर्थशास्त्र आदर्श विज्ञान के रूप में :-

जहाँ रॉबिन्स अर्थशास्त्र को विशुद्ध यथार्थवादी विज्ञान मानते हैं वहाँ कुछ दूसरे अर्थशास्त्री इस विचार से सहमत नहीं हैं। हाट्रे, फ्रेजर, हॉब्सन - जैसे विद्वान यह मानते हैं कि अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, जिसके सहारे अनेक व्यावहारिक समस्याओं के समाधान की कोशिश की जाती है, जैसे बेकारी, गरीबी, असमानता इत्यादि। अतः इसे आदर्श से बिल्कुल अलग नहीं किया जा सकता। ऐसा करने पर अर्थशास्त्र का व्यावहारिक महत्व ही समाप्त हो जाएगी। हाट्रे ने विचार व्यक्त किया, अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र से अलग नहीं किया जा सकता। महात्मा गाँधी ने भी कहा है कि जो अर्थशास्त्री नीति से भिन्न या विरोधी हैं वे निषिद्ध हैं, त्याज्य हैं।

अर्थशास्त्र यथार्थवादी तथा आदर्शवादी विज्ञान है, अर्थात दोनों है :-

इस तरह का विचार प्रो० मार्शल, पीगू जैसे विद्वानों का है। ये विद्वान यह मानते हैं कि यथार्थवादी विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। यह हमें सिद्धांत देता है जिसके आधार पर तथ्यों के बीच कार्य-कारण संबंध की सही व्याख्या संभव होती है। इसके अलावा अर्थशास्त्र हमें इस

Scanned with CamScanner

लायक भी बनाता है कि व्यावहारिक समस्याओं के कारण का विश्लेषण करते हुए हम उनका सही समाधान निकाल सकें, उसके लिए उचित नीति का निर्माण किया जा सके। अतः, अर्थशास्त्र एक आदर्शवादी विज्ञान भी है। प्रो० पीगू का कथन यहाँ अत्यंत सटीक लगता है, "अर्थशास्त्र का महत्व मुख्यतः न तो मानसिक व्यायाम के रूप में है और न केवल सत्य के लिए सत्य की खोज के रूप में, वरन आचारशास्त्र की दासी एवं व्यवहार के दास के रूप में है।" इस प्रकार, पीगू ने स्पष्ट किया है कि अर्थशास्त्र एक ज्ञानदायिनी विज्ञान के साथ-साथ एक फलदायिनी विज्ञान भी है। अर्थशास्त्र हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। इसके अनेक नियम एवं सिद्धांत हमारे ज्ञान में अभिवृद्धि करते हैं। अर्थशास्त्र के सिद्धांत एवं नियमों के सहारे हम विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। अर्थशास्त्र का ज्ञान हो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के समाधान में मदद करता है। इसीलिए, यह ज्ञानदायिनी विज्ञान के साथ-साथ फलदायिनी विज्ञान भी है।

इस प्रकार, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। यह यथार्थवादी विज्ञान के साथ-साथ आदर्शवादी विज्ञान भी है। साथ ही, अर्थशास्त्र एक कला भी है। अतः अर्थशास्त्र को विज्ञान एवं कला दोनों माना जाता है।

यह बात सही है कि अर्थशास्त्र के सिद्धांत उतने निश्चित नहीं होते जितने भौतिक विज्ञान के, क्योंकि अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। समाज में अनेक तरह के परिवर्तन होते रहते हैं। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। मनुष्य एवं उसकी समस्याएँ अर्थशास्त्र के अध्ययन के क्षेत्र हैं, जिनमें हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं। अतः, अर्थशास्त्र अनिश्चित विज्ञान है।

Scanned with CamScanner